TestGenie
AI-Powered Question Paper Generator

Hindi — Class 9

Chapter(s): प्रेमचंद के फटे जूते

Maximum Marks: 39 **Time Allowed: 1 Hour 10 Minutes**

Section A — MCQ & Assertion-Reason (1 mark each)

Q1. लेखक की दृष्टि प्रेमचंद के बाएँ जूते के छेद पर 'अटक' जाती है। इस 'अटकने' से लेखक की कौन-सी गहरी प्रवृत्ति सबसे स्पष्ट होती है? [1 अंक]

A) केवल वस्त्र-फैशन का सूक्ष्म ज्ञान

B) बाहरी विवरण से सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ निकालने की आदत

C) चित्रकला की तकनीकी त्रुटियाँ खोजने की रुचि

D) प्रेमचंद के स्वास्थ्य की चिकित्सकीय जाँच करने की चाह

Q2. 'फोटो खिंचाने की अगर यह पोशाक है, तो पहनने की कैसी होगी?'-इस प्रश्न के पीछे लेखक का तर्क किस निष्कर्ष की ओर बढ़ता है? [1 अंक]

A) प्रेमचंद के पास कपड़ों का बड़ा संग्रह था, पर वे दिखाते नहीं थे

B) प्रेमचंद मंच/फोटो के लिए अलग पोशाक चुनते थे, रोज़मर्रा में नहीं

C) प्रेमचंद में पोशाकें बदलने का 'गुण' नहीं था, वे जैसे थे वैसे ही रहते थे

D) प्रेमचंद ने फोटो के लिए जान-बूझकर जूता फाड़कर पहना था

Q3. यदि फोटो में प्रेमचंद की पूरी वेश-भूषा अपेक्षाकृत साधारण है, फिर भी लेखक की दृष्टि केवल एक छोटी-सी कमी पर टिक जाती है, तो लेखक का मुख्य उद्देश्य क्या बनता है? [1 अंक]

A) फोटो-स्टूडियो की तकनीकी कमियों की आलोचना करना

B) छोटी वस्तु के माध्यम से सामाजिक असमानता और दिखावे की प्रवृत्ति पर तीखा व्यंग्य रचना

C) प्रेमचंद के वस्त्रों की कीमत का अनुमान लगाकर उनकी आर्थिक स्थिति बताना

D) प्रेमचंद की साहित्यिक शैली की तुलना अन्य लेखकों से करना

Q4. पाठ में जूते के बंद और लोहे की पतरी का यांत्रिक-सा विवरण जोड़ने से लेखक का व्यंग्य किस तरह 'विश्वसनीय' बनता है? [1 अंक]

Generated by testgenie.ai — review for accuracy before use.

A) क्योंकि इससे फोटो के रंग और रोशनी का प्रभाव अधिक स्पष्ट होता है

B) क्योंकि ठोस, निरीक्षण-आधारित सूक्ष्मता व्यंग्य को तथ्य-आधार देती है और अतिशयोक्ति की आशंका कम करती है

C) क्योंकि इससे प्रेमचंद की रचनाओं के कथानक का संकेत मिल जाता है

D) क्योंकि इससे लेखक की भाषा अधिक अलंकृत और काव्यात्मक हो जाती है

Q5. लेखक प्रेमचंद को 'साहित्यिक पुरखे' कहकर उनके प्रति सम्मान भी दिखाता है और आलोचना भी करता है। इस संयुक्त प्रभाव को सबसे सटीक रूप से किस विकल्प में पकड़ा गया है? [1 अंक]

A) यह केवल औपचारिक संबोधन है; इसमें न सम्मान है न आलोचना

B) यह आत्म-प्रशंसा का तरीका है, जिससे लेखक स्वयं को प्रेमचंद से बड़ा सिद्ध करता है

C) यह श्रद्धा-युक्त व्यंग्य है, जिसमें आदर्श के प्रति सम्मान रखते हुए व्यवहारिक विडंबना पर चोट की जाती है

D) यह प्रेमचंद के प्रति कटु उपहास है, जिसमें लेखक पूर्णतः नकारात्मक दृष्टि अपनाता है

Q6. अभिकथन (A): लेखक यह संकेत देता है कि प्रेमचंद 'जैसे हैं, वैसे ही' फोटो में आ जाते हैं, क्योंकि वे दिखावे के लिए अलग पोशाक/रूप नहीं गढ़ते।

कारण (R): पाठ में कहा गया है कि इस आदमी में 'पोशाकें बदलने का गुण' नहीं है। [1 अंक]

A) अभिकथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, अभिकथन की सही व्याख्या करता है।

B) अभिकथन और कारण दोनों सही हैं किन्तु कारण, अभिकथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

C) अभिकथन सही है किन्तु कारण गलत है।

D) अभिकथन गलत है किन्तु कारण सही है।

Q7. अभिकथन (A): 'बेतरतीब बँधे बंद' का उल्लेख लेखक की शैली में करुणा और व्यंग्य-दोनों के मिले-जुले प्रभाव को बढ़ाता है।

कारण (R): बेतरतीब बंद यह दिखाते हैं कि व्यक्ति स्थिति-सुधार की कोशिश करता है, पर साधन/सुविधा की कमी उसे सलीका नहीं बनाने देती। [1 अंक]

A) अभिकथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, अभिकथन की सही व्याख्या करता है।

B) अभिकथन और कारण दोनों सही हैं किन्तु कारण, अभिकथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

C) अभिकथन सही है किन्तु कारण गलत है।

D) अभिकथन गलत है किन्तु कारण सही है।

Q8. अभिकथन (A): 'बंद के सिरों पर की लोहे की पतरी निकल जाती है' वाला विवरण यह बताता है कि जूते की खराबी अचानक नहीं, उपयोग-स्थिति और मजबूरी की प्रक्रिया से बनी है।

Generated by testgenie.ai — review for accuracy before use.

कारण (R): पतरी निकल जाने पर छेदों में बंद डालने में परेशानी होती है, इसलिए बंद 'कैसे भी' कस लिए जाते हैं। [1 अंक]

A) अभिकथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, अभिकथन की सही व्याख्या करता है।

B) अभिकथन और कारण दोनों सही हैं किन्तु कारण, अभिकथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

C) अभिकथन सही है किन्तु कारण गलत है।

D) अभिकथन गलत है किन्तु कारण सही है।

Q9. अभिकथन (A): लेखक प्रेमचंद के चेहरे की क्षीणता का वर्णन करके यह निष्कर्ष निकालता है कि वे आत्मविश्वास से खाली थे।

कारण (R): लेखक कहता है कि घनी मूँछें चेहरे को 'भरा-भरा' बतलाती हैं। [1 अंक]

A) अभिकथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, अभिकथन की सही व्याख्या करता है।

B) अभिकथन और कारण दोनों सही हैं किन्तु कारण, अभिकथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

C) अभिकथन सही है किन्तु कारण गलत है।

D) अभिकथन गलत है किन्तु कारण सही है।

Q10. अभिकथन (A): लेखक 'साहित्यिक पुरखे' कहकर प्रेमचंद के प्रति श्रद्धा और साथ ही मूल्य-आधारित व्यंग्य-दोनों को एक साथ साधता है।

कारण (R): 'पुरखे' शब्द का प्रयोग केवल उम्र के आधार पर किया गया है, इससे व्यंग्य का कोई संबंध नहीं बनता। [1 अंक]

A) अभिकथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, अभिकथन की सही व्याख्या करता है।

B) अभिकथन और कारण दोनों सही हैं किन्तु कारण, अभिकथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

C) अभिकथन सही है किन्तु कारण गलत है।

D) अभिकथन गलत है किन्तु कारण सही है।

Section B — Very Short Answer (2 marks each)

Q11. उत्तर ठीक दो वाक्यों में लिखिए। लेखक के 'फोटो खिंचाने की पोशाक' वाले अनुमान से प्रेमचंद के जीवन-चरित्र का कौन-सा निष्कर्ष निकलता है, और यह निष्कर्ष पाठ में किस वाक्य-भाव से पुष्ट होता है? [2 अंक]

Q12. उत्तर ठीक दो वाक्यों में लिखिए। लेखक जूते के 'बंद' और 'लोहे की पतरी' का तकनीकी-सा विवरण क्यों देता है? उत्तर में एक कारण और एक प्रभाव (पाठ के अर्थ पर) स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

Q13. उत्तर ठीक दो वाक्यों में लिखिए। 'अँगुली का इशारा' कहकर लेखक किस प्रकार 'दिखावे' की संस्कृति पर परोक्ष टिप्पणी करता है? अपने उत्तर में संकेत (इशारा) और टिप्पणी-दोनों जोड़िए। [2 अंक]

Generated by testgenie.ai — review for accuracy before use.

Section C — Short Answer (3 marks each)

Q14. उत्तर 3 क्रमांकित बिंदुओं में लिखिए (कुल 130-160 शब्द)। 'प्रेमचंद के फटे जूते' में लेखक एक सामान्य वस्तु (जूता) से मूल्य-आधारित व्यंग्य रचता है। पाठ के आधार पर विश्लेषण कीजिए कि (i) कौन-से यथार्थ विवरण चुने गए, (ii) उनसे कौन-सा सामाजिक/मानवीय अर्थ निकला, (iii) लेखक की दृष्टि 'कोरे हास्य' से अलग कैसे बनती है। [3 अंक]

Q15. उत्तर 3 क्रमांकित बिंदुओं में लिखिए (कुल 130-160 शब्द)। लेखक प्रेमचंद के चित्र को देखकर 'चेहरे' और 'जूते'-दो अलग हिस्सों से चरित्र-निर्माण करता है। बताइए कि इन दोनों स्तरों के संकेत मिलकर प्रेमचंद के व्यक्तित्व के कौन-से विरोधाभासी परंतु संगत पहलू उभारते हैं। [3 अंक]

Q16. उत्तर 3 क्रमांकित बिंदुओं में लिखिए (कुल 130-160 शब्द)। मान लीजिए स्कूल पत्रिका में 'दिखावा बनाम सादगी' विषय पर संपादकीय लिखना है और आप 'प्रेमचंद के फटे जूते' से एक उदाहरण लेना चाहते हैं। पाठ के आधार पर तीन बिंदुओं में लिखिए-(i) कौन-सा उदाहरण चुनेंगे, (ii) उससे क्या संदेश निकालेंगे, (iii) आज के संदर्भ में उसे कैसे लागू करेंगे। [3 अंक]

Section D — Long Answer (5 marks each)

Q17. पाठ 'प्रेमचंद के फटे जूते' के आधार पर लेखक की 'दृष्टि का जूते पर अटक जाना' केवल वस्तु-वर्णन नहीं है। स्पष्ट कीजिए कि फटे जूते का बिंब प्रेमचंद के व्यक्तित्व, उनकी आर्थिक-सामाजिक स्थिति और रचनात्मक नैतिकता (लेखक के संकेतों सहित) को कैसे खोलता है। उत्तर 220-280 शब्दों में दीजिए: 1 वाक्य भूमिका, 5 क्रमांकित शीर्षक-बिंदु (प्रत्येक में 2 वाक्य), 1 वाक्य निष्कर्ष। [5 अंक]

Q18. कल्पना कीजिए कि आपके विद्यालय की पत्रिका के लिए 'सच्ची सादगी बनाम दिखावा' विषय पर संपादकीय लिखना है। पाठ में प्रेमचंद के फोटो-प्रसंग और लेखक की व्यंग्य-मुसकान/संकेतों के आधार पर (क) दिखावे की प्रवृत्ति, (ख) अवसरवादिता, और (ग) ईमानदार रचनाकार/नागरिक की पहचान-इन तीनों को जोड़कर विश्लेषणात्मक संपादकीय लिखिए। उत्तर 220-280 शब्दों में दीजिए: 1 वाक्य भूमिका, 5 क्रमांकित शीर्षक-बिंदु (प्रत्येक में 2 वाक्य), 1 वाक्य निष्कर्ष। [5 अंक]

Section E — Case Study (4 marks each)

Q19. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: [4 अंक]

एक विद्यालय ने वार्षिक पत्रिका के लिए 'हमारे आदर्श' शीर्षक से फोटो-फीचर बनाने का निर्णय लिया। संपादक मंडल ने दो लेखकों की तस्वीरें चुनीं। पहली तस्वीर में लेखक साफ़-सुथरे कपड़ों में मंच पर हैं; दूसरी में एक वरिष्ठ लेखक अपनी पत्नी के साथ साधारण कुरता-धोती में हैं। ध्यान से देखने पर वरिष्ठ लेखक के जूते के

Generated by testgenie.ai — review for accuracy before use.

फीते असावधानी से बँधे हैं और एक जूते में ऐसा छेद है कि अँगुली बाहर झाँकती दिखती है। कुछ विद्यार्थी कहते हैं-"ऐसी तस्वीर पत्रिका में नहीं छापनी चाहिए, प्रतिष्ठा घटेगी।" दूसरे कहते हैं-"यही असली प्रेरणा है; सच्चाई छिपाने से दिखावा बढ़ेगा।" बहस में यह भी बात उठती है कि फोटो खिंचाते समय लोग अक्सर 'विशेष पोशाक' पहनते हैं, पर कुछ लोग जैसे हैं वैसे ही सामने आ जाते हैं। संपादक को डर है कि पाठक 'हँसी' में बात उड़ाकर आगे बढ़ जाएंगे, जबकि लक्ष्य समाज की संवेदनशीलता जगाना है।

(i) इस गद्यांश में फटे जूते/बाहर निकली अँगुली को 'संकेत' मानकर लेखक-जीवन के कौन-से दो निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं? (दो संक्षिप्त बिंदु) (1 अंक)

(ii) संपादक मंडल का यह भय कि पाठक केवल 'हँसी' में बात उड़ा देंगे-पाठ के व्यंग्य-उद्देश्य के संदर्भ में क्यों उचित चिंता है? (1 अंक)

(iii) आप संपादक हों तो 'प्रतिष्ठा' और 'सच' के टकराव में कौन-सा संपादकीय निर्णय लेंगे? निर्णय के साथ 2 ठोस कारण लिखिए, जिनमें एक कारण भाषा/प्रस्तुति-रणनीति से जुड़ा हो। (2 अंक)

Generated by testgenie.ai — review for accuracy before use.

TestGenie
AI-Powered Question Paper Generator

Hindi — Class 9

Chapter(s): प्रेमचंद के फटे जूते

Section A — MCQ & Assertion-Reason (1 mark each)

A1.

उत्तर:

Correct option: (B)

बाहरी विवरण से सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ निकालने की आदत

Explanation:

लेखक जूते के छेद को केवल पहनावे की खराबी नहीं मानता, बल्कि उससे प्रेमचंद की जीवन-स्थितियों और व्यक्तित्व के संकेत पढ़ता है। इसी कारण वह पोशाक, सादगी और जीवन-यथार्थ तक निष्कर्ष निकालता है।; Hence, option (B) is correct.

A2.

उत्तर:

Correct option: (C)

प्रेमचंद में पोशाकें बदलने का 'गुण' नहीं था, वे जैसे थे वैसे ही रहते थे

Explanation:

लेखक तुरंत ही यह मानने से इंकार करता है कि प्रेमचंद की 'अलग-अलग' पोशाकें होंगी और कहता है कि उनमें पोशाकें बदलने का गुण नहीं है। इसका अर्थ है-उनका जीवन दिखावे से नहीं, सहजता और सादगी से चलता था।; Hence, option (C) is correct.

A3.

उत्तर:

Correct option: (B)

छोटी वस्तु के माध्यम से सामाजिक असमानता और दिखावे की प्रवृत्ति पर तीखा व्यंग्य रचना

Explanation:

Generated by testgenie.ai — review for accuracy before use.

लेखक एक मामूली-सी वस्तु/कमी को केंद्र बनाकर 'दिखावे' की संस्कृति पर प्रहार करता है और वास्तविक जीवन-संघर्ष की ओर पाठक को मोड़ देता है। इस प्रकार विवरण केवल दृश्य-चित्रण नहीं, बल्कि सामाजिक मूल्य-निर्णय का व्यंग्यात्मक उपकरण बन जाता है। Hence, option (B) is correct.

A4.

उत्तर:

Correct option: (B)

क्योंकि ठोस, निरीक्षण-आधारित सूक्ष्मता व्यंग्य को तथ्य-आधार देती है और अतिशयोक्ति की आशंका कम करती है

Explanation:

यांत्रिक विवरण पाठक को यह विश्वास दिलाता है कि लेखक ने स्थिति को करीब से देखा-समझा है, इसलिए व्यंग्य 'हवा में' नहीं बल्कि अनुभव के आधार पर खड़ा है। इसी तथ्य-आधारित प्रस्तुति से संकेतित सामाजिक आलोचना अधिक प्रभावी और विश्वसनीय बनती है। Hence, option (B) is correct.

A5.

उत्तर:

Correct option: (C)

यह श्रद्धा-युक्त व्यंग्य है, जिसमें आदर्श के प्रति सम्मान रखते हुए व्यवहारिक विडंबना पर चोट की जाती है

Explanation:

'साहित्यिक पुरखे' संबोधन में परंपरा और योगदान के प्रति आदर निहित है, पर उसी के साथ लेखक जीवन-स्थितियों/समाज की विडंबना को उभारकर चोट भी करता है। इस प्रकार भाव-धरातल पर सम्मान और मूल्य-आलोचना एक साथ चलकर 'श्रद्धा-युक्त व्यंग्य' रचते हैं। Hence, option (C) is correct.

A6.

उत्तर:

Correct option: (A)

अभिकथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, अभिकथन की सही व्याख्या करता है।

Explanation:

अभिकथन में 'जैसे हैं, वैसे ही' का भाव प्रेमचंद की गैर-कृत्रिम जीवन-शैली से जुड़ता है। कारण में 'पोशावे बदलने का गुण नहीं' वही आधार देता है, इसलिए कारण अभिकथन की ठीक व्याख्या करता है।

Generated by testgenie.ai — review for accuracy before use.

A7.

उत्तर:

Correct option: (A)

अभिकथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, अभिकथन की सही व्याख्या करता है।

Explanation:

अभिकथन में करुणा-व्यंग्य का संयुक्त प्रभाव बताया गया है, जो यथार्थ विवरणों से बनता है। कारण स्पष्ट करता है कि 'कैसे भी कस' लेने में कोशिश तो है, पर साधन-सीमा के कारण बेतरतीबी आती है; यही मिश्रित प्रभाव की वजह है।

A8.

उत्तर:

Correct option: (A)

अभिकथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, अभिकथन की सही व्याख्या करता है।

Explanation:

अभिकथन में 'प्रक्रिया' और 'मजबूरी' से बनी स्थिति का संकेत है। कारण बताता है कि पतरी निकलने से तकनीकी दिक्कत पैदा होती है और उसी से बेतरतीब कसाव जैसी स्थिति बनती है; इस तरह कारण अभिकथन को स्पष्ट करता है।

A9.

उत्तर:

Correct option: (D)

अभिकथन गलत है किन्तु कारण सही है।

Explanation:

अभिकथन गलत है क्योंकि पाठ में क्षीणता के साथ-साथ मूँछों से 'भरा-भरा' प्रभाव देकर व्यक्तित्व-गरिमा/जीवट का संकेत मिलता है, आत्मविश्वास-हीनता का निष्कर्ष नहीं। कारण सही है क्योंकि यह वाक्यांश पाठ में स्पष्ट रूप से मौजूद है।

A10.

उत्तर:

Correct option: (C)

Generated by testgenie.ai — review for accuracy before use.

अभिकथन सही है किन्तु कारण गलत है।

Explanation:

अभिकथन सही है क्योंकि 'साहित्यिक' जोड़कर लेखक प्रेमचंद को परंपरा/आदर्श-पुरुष के रूप में रखता है और उसी आधार पर दिखावे पर चोट करता है। कारण गलत है क्योंकि यहाँ 'पुरखे' का अर्थ केवल आयु नहीं, साहित्यिक पूर्वज/मानक भी है, जो व्यंग्य-धार को मजबूत करता है।

Section B — Very Short Answer (2 marks each)

A11.

उत्तर:

लेखक के अनुमान से यह निष्कर्ष निकलता है कि प्रेमचंद दिखावे के लिए अलग रूप-रंग नहीं अपनाते, वे सादगी में जीते हैं। यह निष्कर्ष 'यह जैसा है, वैसा ही फोटो में खिंच जाता है' और 'इसमें पोशाकें बदलने का गुण नहीं है' जैसे वाक्य-भाव से पुष्ट होता है।

A12.

उत्तर:

लेखक यह विवरण इसलिए देता है ताकि जूते की बदहाली को ठोस, विश्वसनीय और दृश्य रूप में सामने रखकर प्रेमचंद की तंगी/मजबूरी का यथार्थ संकेत बनाया जा सके। इसका प्रभाव यह होता है कि पाठक जूते को केवल वस्तु न मानकर जीवन-स्थितियों और संघर्ष का प्रमाण समझने लगता है।

A13.

उत्तर:

'अँगुली का इशारा' उस सच का संकेत है जो फोटो की सजावट के पीछे छिप नहीं सकता-यानी अभाव और संघर्ष। इसी संकेत के सहारे लेखक परोक्ष रूप से कहता है कि दिखावे की संस्कृति बाहरी चमक से सत्य ढकना चाहती है, पर यथार्थ का छोटा-सा प्रमाण भी उसे खोल देता है।

Section C — Short Answer (3 marks each)

A14.

उत्तर:

1) विवरण-चयन: लेखक बाएँ जूते के बड़े छेद, बाहर निकली अँगुली, बेतरतीब बँधे बंद और 'लोहे की पतरी' निकलने जैसे ठोस दृश्य-तत्व चुनता है। ये छोटे लगने वाले संकेत चित्र को 'सजावटी' नहीं, जीवन के बीच का यथार्थ बना देते हैं।

Generated by testgenie.ai — review for accuracy before use.

2) अर्थ-निर्माण: इन्हीं संकेतों से लेखक प्रेमचंद की तंगी, संघर्ष और सादगी का निष्कर्ष निकालता है-फोटो जैसे अवसर पर भी सच छिप नहीं पाता। 'अँगुली का इशारा' वस्तु से आगे बढ़कर मानवीय स्थिति का मूक प्रमाण बन जाता है।

3) कोरे हास्य से अलग: लेखक हँसी के लिए जूते का मज़ाक नहीं उड़ाता, बल्कि दिखावे की प्रवृत्ति पर चोट करता है और आदर्श/सत्य के पक्ष में खड़ा होता है। व्यंग्य यहाँ संवेदना और मूल्य-बोध जगाता है, केवल मनोरंजन नहीं।

A15.

उत्तर:

1) चेहरे के संकेत: कनपटी का चिपकना और गाल की हड्डियों का उभरना कठिन जीवन-स्थितियों और शारीरिक क्षीणता की सूचना देता है। पर घनी मूँछें 'भरा-भरा' प्रभाव देकर आत्मबल और गरिमा का संकेत भी जोड़ देती हैं।

2) जूते के संकेत: एक जूते का ठीक होना और दूसरे में बड़ा छेद, साथ में बेतरतीब बंद-ये अभाव, किफायत और मजबूरी की दुनिया दिखाते हैं। फोटो के अवसर पर भी जूते की वास्तविक दशा रह जाती है, जिससे बनावट का अभाव सिद्ध होता है।

3) संयुक्त निष्कर्ष: दोनों स्तर मिलकर बताते हैं कि प्रेमचंद के जीवन में कष्ट है, पर व्यक्तित्व में झूठी शान नहीं। क्षीणता के भीतर जीवट और सादगी का 'संगत' विरोधाभास उभरता है, जो उन्हें आदर्श-पुरुष के रूप में और विश्वसनीय बनाता है।

A16.

उत्तर:

1) उदाहरण-चयन: मैं प्रेमचंद के बाएँ जूते के बड़े छेद और बाहर निकली अँगुली वाला प्रसंग चुनूँगा, साथ ही लेखक का वाक्य-भाव 'यह जैसा है, वैसा ही फोटो में खिंच जाता है' जोड़ूँगा। यह उदाहरण दिखाता है कि सार्वजनिक छवि के क्षण में भी वास्तविकता उपस्थित रहती है।

2) संदेश: संदेश यह होगा कि सादगी बनावट नहीं, ईमानदार जीवन-शैली है; और अभाव के बावजूद सत्य से समझौता नहीं करना ही व्यक्तित्व की गरिमा है। 'अँगुली का इशारा' बताता है कि सच अक्सर छोटी चीज़ों में बोलता है।

3) आज का अनुप्रयोग: आज सोशल मीडिया/प्रदर्शन के दौर में लोग छवि सँवारने पर अधिक ध्यान देते हैं; यह पाठ सिखाता है कि सार्थकता काम और मूल्यों में है, प्रदर्शन में नहीं। विद्यार्थी जीवन में भी ब्रांड/दिखावे की जगह स्वावलंबन, ईमानदारी और आवश्यकताओं के अनुरूप सादगी अपनाना ही सही है।

Generated by testgenie.ai — review for accuracy before use.

Section D — Long Answer (5 marks each)

A17.

उत्तर:

यह पाठ एक छोटे-से दृश्य-फोटो में फटे जूते-के सहारे प्रेमचंद के जीवन-मूल्य और साहित्यिक ईमानदारी को उजागर करता है।

1) 'दृष्टि का अटकना'-बिंब का चयन: लेखक का ध्यान चेहरे पर नहीं, जूते के छेद पर टिकता है, जिससे संकेत मिलता है कि यथार्थ अक्सर चमकदार मुखौटों के नीचे छिपा होता है। यह चयन पाठक को 'सज्जा' नहीं 'सच्चाई' देखने की आदत सिखाता है।

2) आर्थिक तंगी का ठोस संकेत: बाएँ जूते का छेद और बाहर निकली अँगुली गरीबी का प्रत्यक्ष प्रमाण बनते हैं। यह गरीबी करुणा नहीं, व्यवस्था की विषमता और लेखक-जीवन की कठिनाई का संकेत बनकर उभरती है।

3) सादगी और 'पोशाकें बदलने का गुण' न होना: लेखक कहता है कि प्रेमचंद के पास फोटो-खिंचाने वाली अलग पोशाक नहीं होगी; वे जैसे हैं वैसे ही फोटो में आ जाते हैं। यह सादगी दिखावे-विहीन जीवन-चरण और आत्मसम्मान की स्थिरता को दर्शाती है।

4) व्यंग्यात्मक प्रश्नों की रणनीति: "तुम चलोगे कैसे?" जैसे प्रश्न जूते की चिंता नहीं, सामाजिक संवेदनहीनता पर चोट हैं। लेखक प्रेमचंद को 'साहित्यिक पुरखा' कहकर आदर भी देता है और समाज को आईना भी दिखाता है।

5) रचनात्मक नैतिकता-आदर्श का पक्ष: फटा जूता बताता है कि प्रेमचंद ने सुविधाओं से समझौता नहीं, सच्चाई से समझौता किया। इसी कारण उनका जीवन-यथार्थ उनकी लेखनी की नैतिक शक्ति बन जाता है और व्यंग्य 'कोरे हास्य' से ऊपर उठकर परिवर्तन-चेतना जगाता है।

निष्कर्षतः फटे जूते का बिंब प्रेमचंद की गरीबी, सादगी और सत्यनिष्ठ रचनाधर्मिता का प्रतीक बनकर पाठक को दिखावे के विरुद्ध खड़ा करता है।

A18.

उत्तर:

यह संपादकीय प्रेमचंद के फोटो-प्रसंग से सीख लेकर आज के 'छवि-निर्माण' के दबाव में सच्ची सादगी की कसौटी तय करता है।

1) छवि बनाम चरित्र: आज बहुत-से लोग फोटो/सोशल छवि के लिए अलग पोशाक और अलग भाषा गढ़ते हैं, पर चरित्र वही रहता है। पाठ में प्रेमचंद का 'जैसा है, वैसा ही' होना बताता है कि चरित्र और सार्वजनिक

Generated by testgenie.ai — review for accuracy before use.

छवि में दूरी घटनी चाहिए।

2) दिखावे की आर्थिक-नैतिक कीमत: दिखावा अक्सर उधार, अनावश्यक खर्च और प्रतिस्पर्धा पैदा करता है जिससे मूल ज़रूरतें दब जाती हैं। प्रेमचंद का फटा जूता बताता है कि सीमित साधन में भी आत्मसम्मान और सच्चाई बचाई जा सकती है।

3) अवसरवादिता की पहचान: अवसरवादी व्यक्ति मंच/फोटो के हिसाब से 'रूप' बदलता है और प्रशंसा-संग्रह को लक्ष्य बना लेता है। लेखक का संकेत कि प्रेमचंद में "पोशाकें बदलने का गुण नहीं" अवसरवादिता के उलट जीवन-स्थिरता को रेखांकित करता है।

4) व्यंग्य-सुधार की भाषा: "तुम चलोगे कैसे?" जैसे व्यंग्यात्मक प्रश्न पाठक को चुभते हैं, इसलिए सोच बदलने की संभावना बढ़ती है। परसाई/इस पाठ की परंपरा बताती है कि व्यंग्य कोरे हास्य के बजाय आदर्श के पक्ष में खड़ा होता है।

5) ईमानदार नागरिक/रचनाकार की कसौटी: ईमानदार व्यक्ति अपनी सीमाएँ छिपाकर नहीं, स्वीकार कर काम की गुणवत्ता से पहचान बनाता है। प्रेमचंद की सादगी यह संदेश देती है कि सामाजिक सम्मान वस्त्र-वैभव से नहीं, नैतिक साहस और श्रम से आता है।

निष्कर्षतः सच्ची सादगी दिखावे का निषेध नहीं, बल्कि छवि के स्थान पर चरित्र को प्राथमिकता देने का नाम है।

Section E — Case Study (4 marks each)

A19.

(i) इस गद्यांश में फटे जूते/बाहर निकली अँगुली को 'संकेत' मानकर लेखक-जीवन के कौन-से दो निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं? (दो संक्षिप्त बिंदु)

उत्तर:

पहला, लेखक का जीवन आर्थिक तंगी/साधनों की कमी से जुड़ा है, जिसे वह छिपाकर 'विशेष पोशाक' से ढकता नहीं। दूसरा, उसके व्यक्तित्व में सादगी और दिखावे-विरोध है, इसलिए वह सार्वजनिक तस्वीर में भी स्वयं को बदलकर प्रस्तुत नहीं करता।

(ii) संपादक मंडल का यह भय कि पाठक केवल 'हँसी' में बात उड़ा देंगे-पाठ के व्यंग्य-उद्देश्य के संदर्भ में क्यों उचित चिंता है?

उत्तर:

क्योंकि व्यंग्य का लक्ष्य कोरा मनोरंजन नहीं, आदर्श के पक्ष में चेतना और परिवर्तन की सोच जगाना है; यदि पाठक केवल मज़ाक समझकर आगे बढ़ जाएँ, तो सामाजिक असुविधा/अन्याय पर जरूरी आत्म-परीक्षण

Generated by testgenie.ai — review for accuracy before use.

नहीं होगा।

(iii) आप संपादक हों तो 'प्रतिष्ठा' और 'सच' के टकराव में कौन-सा संपादकीय निर्णय लेंगे? निर्णय के साथ 2 ठोस कारण लिखिए, जिनमें एक कारण भाषा/प्रस्तुति-रणनीति से जुड़ा हो।

उत्तर:

मैं वरिष्ठ लेखक की तस्वीर प्रकाशित करूँगा/करूँगी और उसके साथ संदर्भ-टिप्पणी/कैप्शन जोड़ूँगा/जोड़ूँगी। पहला कारण: फटा जूता सच्ची सादगी और साहित्यिक ईमानदारी का प्रतीक है; इसे छिपाना दिखावे को बढ़ावा देगा। दूसरा कारण (प्रस्तुति-रणनीति): कैप्शन/संपादकीय नोट में व्यंग्यात्मक प्रश्न-शैली (जैसे 'हम अपने आदर्शों को चलने लायक जूते दे पाए?') और संवेदनशील भाषा रखकर पाठक की हँसी को आत्मचिंतन में बदला जा सकता है।

Generated by testgenie.ai — review for accuracy before use.